ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–७०
दिनांक– शुक्रवार, १५ सितम्बर, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 34.4 एवं 25.4 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 91 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 69 प्रतिशत, हवा की औसत गति 2.6 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 5.2 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 8.2 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 30.4 एवं दोपहर में 37.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 0.0 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(16–20 सितम्बर, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 16–20 सितम्बर, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित की अवधि में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते है। अगले 12–24 घंटों में मैदानी तथा तराई के जिलों में कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। उसके बाद के दिनों में अधिकतर स्थानों पर मौसम शुष्क रह सकता है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 25–28 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- औसतन 10–15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्य रूप से पुरवा हवा हवा चलने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पिछात बोयी गई धान की फसल जो कल्ले बनने की अवस्था में हो, में 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। कहीं–कहीं अगात बोयी गई धान की फसल जो बाली निकलने की अवस्था में आ गई हो, में 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें।
- धान की फसल में ब्राउन प्लांट होपर कीट की निगराणी करे। यह मच्छरनुमा कीट पौधा की पत्तियों एवं तने से रस चुसता है जिससे पत्तिया सुखी हुई तथा भुरे रंग की हो जाती है। प्रारंभ में यह एक स्थान में रहते है जो बाद में सारे खेत में फैल जाते हैं एवं कभी–कभी यह सारी फसल को नष्ट कर देती है। यदि प्रकोप दिखाई दें तो इमिडाक्लोरोप्रिड/0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी या फेनोबुकार्ब 50 ई.सी./1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- धान की फसल में तना छेदक कीट से बचाव हेतु करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने–दार दवा का 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें।
- बरसात के दिनों में परती खेतो एवं खेतो के मेड़ पर अत्यधिक दूब, मोथा, घास वाली जंगल उग आते है, जिसमें कीट–व्याधि अपना निवास स्थान बनाकर अपने अण्डे को सुरक्षित रखते है। अण्डे से पिल्लू बनते ही ये आस–पास के फसलों में घुस जाते हैं एवं पौधे की शाखाओं को खाकर अत्यधिक नुकसान पहुँचाते हैं। अतः इन जंगलों को नष्ट करने के लिए खरपतवारनाशी दवा ग्लाइफोसेट 41 : एस0एल0 का 10–15 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर कड़ी धूप के वक्त छिड़काव करें। अच्छे परिणाम के लिए साफ पानी का प्रयोग करें। छिड़काव के बाद छिड़काव वाले यंत्र की सफाई अवष्य कर लें। इस दवा को किसी भी खड़ी फसल में छिड़काव कदापि नहीं करे।
- भिंडी, उरद् और मूंग की फसल में पीला मोजैक वायरस रोग की निगरानी करें। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसमें पौधे की षिराए पीली होकर मोटी हो जाती है और बाद में पत्तियॉ भी पीली परने लगती है। बीमारी की उग्र अवस्था में तने एवं फलों का रंग भी पीला पर जाता है। रोगग्रस्त पौधा एवं फलियाँ छोटे रह जाते है। रोगग्रस्त पौधों को उखार कर नष्ट कर दें। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- फूलगोभी की मध्यकालीन किस्में जैसे– पूसा अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक–1, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेधना, काषी कुवॉरी एवं अर्ली स्नोवॉल की रोपाई करे। अगात फुल गोभी में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगराणी करे। पत्तागोभी की अगात किस्मों की बुआई नर्सरी में करें। इसके लिए प्राइड ऑफ इण्डिया, गोल्डेन एकर, पूसा मुक्ता, पुसा अगेती एवं अर्ली ड्रम हेड किस्में अनुषंसित है। नर्सरी से खरपतवार समय–समय पर निकालते रहें ताकि स्वस्थ पौध मिल सकें।
- अगात बोयी गई धान की फसल जो गाश निकलने की अवस्था में आ गयी हो, उसमें 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की नियमित रुप से निगरानी करें। इस कीट के षिषु एवं पौढ़ दोनों जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विषेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक–एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है।

आज का अधिकतम तापमानः 33.7 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.4 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 25.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.1 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)